

[illegible]

नमो नमो तपो चित्तं नमो गंगा पंख पाद नमो ॥ गे वि न
करवे नुवा द तप री द बा ग भूष भजे ॥ कि ल्मा य ध्या न
पुष्प ॥ भस्त्रा न ॥ य सौ य स नै श्वरा य स नै स भ
ठा य य स नै यै गे वि दा श ॥ इ दं भ ग व ते श्री कृष्ण
अस्त्रा न ॥ ॥ वि द्य ॥ वस्त्रा द्या म च्यु ते भ क्त्या परि
कार्य वि चि चि र्क ॥ स्या म लो के उ पी त्या तु वि द्यु लो के
म लो य ते ॥ ॥ व ॥ ह प वि त्र म स्त्री ॥ ३ ६ भ ग व ते ॥
चे न्द न ॥ म ल या गिरि स मु त्प नै गं धा द्यं सु म नो ह
री ॥ रा जा नः स र्व दृ क्षा णी चे न्द नै प रि गृ हे तां इ दं भ
ग व ते वि ले म नै ॥ ॥ अ नु र क्तं कु म रै व क र्प रे ण
सु म न्वि तं म ल य जै स मा यु क्तं र्द नै र्गं धा च र
नै स म य ध्या वि ॥ ॥ अ ज्ञा वि दा मो द र ग म

सो लु ग्रा हि मां उरु का त म ॥ अ नु र क्तं कु म रै व क र्प रे ण
नै प रि गृ हे तां इ दं भ ग व ते य सौ प वा द ॥ ॥ ता र्था
न मो लो के कि ता र्था य ए मः पा प ह रा य च ॥ न म स त्र
र सारा य न मः स र्ग र सा यि ने भ ग व ते ॥ ॥ न ल
सि ॥ ॥ त लु सौ स त नो मा नि स दा र्व के श वा पि य ॥
के भ वा र्थ वि चि ता नि व र द भ व शो भ नै इ दं भ
ग व ते ॥ ॥ स्वी मा ल्या ॥ के लु र जा ति पु ष्यै श्व कौ के
न ग व ते ॥ ॥ न न पु ष्यै श्व र चि मा ले य वृ ति गृ
ह्य तां ॥ भ ग व ते ॥ ॥ दु र्वा क्ष त ॥ दु र्वा क्ष त प रं दि वे
स र्व पु ष्य ति मा त म ॥ द्वा द सा क्ष र स च्यु ते दु र्वा गृ
ह्य तां स पु ष्य ॥ ॥ प न ॥ ॥ उ त्प र्णी षु ज गं धा द्यं
स त पु ष्यं दु र्वा क्ष य ॥ च क पा णे गृ ह्य तां वि शो भि तं

तित्तवानन्दे वासुदेव नमो तनुते ॥ ते जो सि सु ॥
 नैवेद्या ॥ वसुदेव वद आशी लदेवकी नैदन प्रभो ॥
 शीरव नमो गदापाणो लक्ष्मी नाथ प्रसीद मे ॥ म
 ले ॥ ॥ नमो नमो ते अरो यज्ञान सभवा यज्ञो
 नमते योगो विद्याय ॥ ॐ चा फल नी ॥ ॥
 ग्वाग्द वा ॥ पातो लत ल स भूत वद नो मो जे न
 षा ॥ नाना गुण शमा कीर्तिता मूर्ति प्रतिगृहे
 ती ॥ ॥ अथ ॥ अथ वल कर्प्ये ॥ ॥ ॥ ॥
 ते कर्तव्यो यच्च भूभारो हरणा य ॥ गृहा स्म
 र्थं मया दत्तं देवकी शहि न प्रभो ॥ इदं भागव

तैश्चाक्षुषीया चर्च गृहाणात्तुहा ॥ सख भापूय
 जा ॥ तैपुताशा गरी त्वं नैवेना सुधृत करे ॥ अः
 मृतमथ नो त्वं नैवेना सुधृत करे ॥ अः
 मण्डल ॥ ता नो वे सुदेवदयासी लदेवकी नंदन
 पुत्रो ॥ प्रारप चैत्रे गजपाणे लक्ष्मी नाथ प्रसी
 द मे ॥ आर्नंद वामनं कृमि वैकुण्ठ पुरुषोत्तमं
 श्री सुदेव लक्ष्मी के शोभा धर्म मधुसूदन ॥ वराह
 पुंदरीकाक्षं नृसिंहं दैत्य सृदनं ॥ दामोदरं प
 रं नाभं कैलाशं वंगं रुद्रं कोजं ॥ गेविन्दं मधुत
 तं ॥ भैरवं तं मधुपरां गितं ॥ अथोक्ष्मं जगद्गो
 तं सगं स्थितं चैत्रं कारकं ॥ त्रिलोकं केही जगद्ग

[illegible]

अथ राधे सहस्रं कृष्णं जेतुं नैर्निद्रा मया ॥ कुलो
हमिति श्री भक्त्या धर्मस्वयम्-उत्तरद्वये ॥ वरदे हि
श्रीकृष्णे देहि भाग्यं भूतार्थदेहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं
देहि सौख्यं कामान् देहि मे ॥ ॥ पुच्छतां ॥ महो
लावि सर्जनं ॥ ब्राह्मणपूजा ॥ दक्षिणा ॥ कृष्ण
छ मिश्रते मा गण सिद्धे धी हिरणीमहिने देवते
अमुक शर्म ब्राह्मण आदि ददे ॥ आरतिरात्रिकेः
ते ॥ ॥ तत्र प्रभाते पुनरुत्तरपूजा विष्णवे पूर्व
वत् ॥ ॥ चिसर्जनं ॥ गङ्गा गङ्गा परं स्थानी पुराणी
पुनरुत्तरमा ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवा विशन्ति परमेष्ठ
इति ॥ इति नारायण मिश्रतः ॥ सं १०१७ मिश्रभूमि ॥

[illegible]